GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में परिवार की बहुआयामी भूमिका:, एक अध्ययन

प्रिया
शोधार्थी
डा0 सुनीता सिंह
शोध पर्यवेक्षक
ई–मेलः– priya16986@gmail.com

सारांश

परिवार बालक के शैक्षिक विकास का पहला पड़ाव है इसलिए इसे बालक की प्रथम पाठशाला भी कहा जाता है। बालक के जीवन में सीखने का प्रारम्भ घर से होता है। बच्चे के जन्म के पश्चात् उसके परिवार के सदस्य उसे बोलना, उठना–बैठना, चलना–फिरना, खाना–पीना, सही गलत में अंतर करना, अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित, नैतिक–अनैतिक तथा समाज में आचरण करने का तरीका सिखाते हैं, फिर कुछ बड़ा होने पर उसे पढ़ना–लिखना सिखाते हैं। परिवार बालक को स्नेह, प्यार–दुलार देने के साथ ही भौतिक सुख–सुविधाए, आर्थिक एवं भावनात्मक सुरखा भी प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य अभिभावक–संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना है। इसके अन्तर्गत अभिभावकों का बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, भावनात्मक समर्थन, मार्गप्रदर्शन, शैक्षिक वातावरण, अभिभावकों की बच्चों के प्रति शैक्षिक अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं का अध्ययन किया जायेगा।विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के अन्तर्गत परिवार का सहयोग, संवाद, प्रोत्साहन, विश्वास, स्वीकृति, सहानुभूति आदि सम्मिलित किया गया है। अतः कह सकते हैं कि बच्चों के लिए माता–पिता की उपस्थिति जितनी आवश्यक है, उतनी ही अभिभावकों के लिए बच्चों के प्रति विश्वास एवं सकारात्मक दृष्टिकोण भी आवश्यक है।

मुख्य शब्द

अभिभावक संरक्षण सहयोग, शैक्षिक विकास, विद्यार्थी, परिवार, पारिवारिक वातावरण।

प्रस्तावना

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। बच्चे के शैक्षिक विकास में विद्यालय के साथ–साथ पारिवारिक परिवेश का भी विशेष महत्व है। बच्चों के शैक्षिक विकास का आधार परिवार है। प्रारम्भिक अवस्था में बच्चा परिवार में रहकर ही आचरण सम्बंधी आदतों को सीखता है। परिवार बालक की प्रथम सामाजिक संस्था है, जहाँ पर वह परिवार के सदस्यों से बहुत कुछ सीखता है। इस प्रकार वह अनौपचारिक रूप से शिक्षा ग्रहण करता है। बच्चे के जीवन के प्रारम्भिक वर्षो में स्वस्थ शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, संवेगात्मक, सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है। परिवार बच्चे को सुरक्षा प्रदान करने के साथ ही उसके व्यक्तित्व का विकास करता है। जिन परिवारों में घर का वातावरण स्नेह एवं सौहार्दपूर्ण होता है, उन परिवारों के बच्चे अधिक उन्नति करते हैं परन्तु जिन परिवारों में घर का वातावरण नकारात्मक एवं दूषित होता है या फिर हर समय कलहपूर्ण रहता है उन परिवार के बच्चों के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उनके शैक्षिक विकास एवं उपलब्धि को प्रभावित करता है। अतः बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए परिवार में बड़े बुजुर्गो व माता–पिता का बच्चों के प्रति स्नेह, सहानुभूति, स्वीकृति एवं उन पर विश्वास बहुत आवश्यक है। दुर्भाग्य से जो अभिभावक अपने बच्चों पर विश्वास नहीं करते हैं या फिर उनसे अत्यधिक अपेक्षाएं रखते हैं और जब बच्चे उनकी अपेक्षाएं पूरी नहीं कर पाते हैं तो वे तनाव व कुण्ठा का शिकार हो जाते हैं और अपने जीवन को बोझिल एवं व्यर्थ समझने लगते हैं। कभी–कभी ये नकारात्मकता उनके मन–मस्तिष्क पर इतनी अधिक हावी हो जाती है कि वे आत्म–हत्या जैसा नकारात्मक कदम भी उठा लेते हैं ऐसी अवस्था में बच्चे को मानसिक रूप से मजबूत होना आवश्यक है और ये मजबूती परिवार ही प्रदान कर सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

परिवार का बच्चे के जीवन में विशेष महत्व है। यह समाज की प्रमुख सामाजिक संस्थाओं में से एक है। परिवार के भीतर ही बच्चा सामाजिक मानदण्डों और मूल्यों को आत्मसात करता है और समाज के अन्य सदस्यों के साथ सम्बन्ध बनाने में सक्षम होता है। परिवार में ही बच्चे के व्यक्तित्व का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है। मनोवैज्ञानिक इस बात से

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

सहमत है कि जिन बच्चों का अपने माता–पिता के साथ सुरक्षित जुड़ाव होता है उनके सुखी, सफल एवं संतुलित व्यस्क बनने की सम्भावना अधिक होती है। माता–पिता अपने बच्चों को दुनिया की खोज, वस्तुओं को समझने और सम्बन्धों का अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इससे बच्चे का शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास ठीक प्रकार से होता है।

समस्या कथन

'अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में परिवार की बहुआयामी भूमिका: एक अध्ययन।'

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

1. सिंह एवं रंगनाथन (2026) द्वारा सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अधिगाम परिणामों पर अभिभावकीय भागीदारी के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि अभिभावक शिक्षक परिषद की बैठकों में भाग लेने, बच्चों की पढ़ाई से सम्बन्धित चर्चा करने एवं गृह कार्य की नियमित निगरानी करने से बच्चों की पढ़ाई पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. किम (2022) ने पाँच दशकों में अभिभावक भागीदारी और शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित शोध पत्रों का व्यापक रूप से अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अभिभावकों की शैक्षिक अपेक्षाएं और आकांक्षाओं का प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
3. एर्ना रोस्टिन (2018) ने बच्चों के विकास पर परिवार के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि बच्चे को शिक्षित करने में परिवार की अहम् भूमिका है। पारिवारिक वातावरण में ही वे शैक्षिक मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।
4. जायसवाल एवं चौधरी (2017) ने अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यार्थियों की उपलब्धि के मध्य संबंधों से सम्बन्धित पूर्ववर्ती अध्ययन की समीक्षा की। समीक्षा से ज्ञात हुआ कि पूर्ववर्ती अध्ययन में अभिभावकों के पालन–पोषण की शैली, माता–पिता की अपेक्षाएं, घर

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

पर शैक्षिक सहयोग तथा विद्यालयीय कार्यक्रमों में अभिभावकों की सहभागिता आदि का प्रभाव बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

5. विजयलक्ष्मी एवं मुनिअप्पन (2016) ने अध्ययन में पाया कि अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक संबंध है। विद्यार्थियों के शैक्षिक कार्यो में अभिभावकों की सक्रिय भूमिका उनके शैक्षिक प्रदर्शन को बढ़ाती है।
6. हिल एवं ताइसन (2009) ने अभिभावकीय सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में एक मेटा–विश्लेषण किया। अध्ययन के विश्लेषण से पता चला कि अभिभावकों को बच्चों के साथ शैक्षिक लक्ष्यों, अपेक्षाओं और भविष्य की शिक्षा के संबंध में बातचीत उन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

पूर्ववर्ती शोध कार्यो का अवलोकन करने के उपरान्त यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के शैक्षिक विकास या शैक्षिक उपलब्धि में अभिभावकीय सहभागिता आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। अतः बच्चों के शैक्षिक विकास में परिवार की भूमिका को समग्र एवं बहुआयामी रूप में देखा जा सकता है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक सहयोग, भावनात्मक समर्थन, आर्थिक संसाधन, पारिवारिक वातावरण, डिजिटल सीखने में सहयोग, अध्ययन आदतों का विकास, नैतिक एवं सामाजिक मार्गदर्शन आदि आयामों को सम्मिलित किया जा सकता है, जोकि बच्चे के शैक्षिक विकास में अहम् भूमिका का निर्वाह करते हैं। अतः प्रस्तुत शोध पत्र परिवार की बहुआयामी भूमिका और विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के मध्य सम्बन्धों का समग्र रूप से अध्ययन करने का प्रयास करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1- अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना।

2- अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध विधि

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों को समझने के लिये गुणात्मक सामग्री विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन के लिये द्वितीयक स्त्रोत के रूप में शोध पत्र, थीसिस, पुस्तकें, शोध रिर्पोट आदि का प्रयोग किया गया।

अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना

अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में परिवार की बहुआयामी भूमिका है। परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त अन्य सदस्यों के व्यक्तित्व का प्रभाव भी बच्चे पर पड़ता है। बच्चा नित्य नयी चीजों को सीखता है जिससे उसका मानसिक विकास होता है। परिवार एवं माता–पिता से मिलने वाला प्रोत्साहन एवं प्रेरणा उसे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है जो उसके संज्ञानात्मक विकास में सहायता करता है। परिवार में बच्चा अध्ययन से सम्बन्धित आदतों का निर्माण, आत्म अनुशासन एवं आत्म–प्रेरणा पर बल, सीखने को दैनिक गतिविधियों से जोड़ना, खेल–खेल में सीखना, सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न करना, भाषा एवं संवाद कौशल का विकसित करना, विद्यालय में नियमित उपस्थिति को बढ़ावा देना, अवकाश काल एवं समय का सद्पयोग करना, रचनात्मक कार्यो में संलग्नता, ईमानदारी एवं परिश्रम के महत्व को समझना आदि सीखता है। अभिभावकों का बच्चों के प्रति भावनात्मक समर्थन बच्चों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। फैन एवं चेन. (2001) के अनुसार अभिभावकीय सहभागिता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।

अभिभावकों द्वारा बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने से बच्चा भी शैक्षिक कार्यो को करने में सक्रिय रहता है, साथ ही उसे यह आभास होता है कि माता–पिता मेरे शैक्षिक कार्यो पर नजर रखते हैं इसलिये मुझे भी अपना श्रेष्ठ देने का प्रयास करना चाहिए ताकि उन्हें भी अच्छा लगे कि बच्चा पढ़ाई में ध्यान देता है। अभिभावकों का कर्तव्य है कि वह बच्चे को यह विश्वास दिलाये कि वह भी यह कार्य कर सकता है, उनका यह कथन बच्चे के आत्म–विश्वास को बढ़ावा देता है और बच्चे की अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न करता है। अतः यह कह सकते है कि परिवार न केवल बच्चों का पालन–पोषण करता है बल्कि उसे समाज का एक उपयोगी सदस्य भी बनाता है। जहॉ विद्यालय बालक को औपचारिक शिक्षा

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

प्रदान करते हैं वहीं परिवार बालक को सतत् एवं अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करता है जोकि निरन्तर चलती रहती है। इस प्रकार परिवार की भूमिका बच्चे द्वारा परीक्षा में अच्छे अंक लाने तक सीमित नहीं है बल्कि यह बहुआयामी है इसके अन्तर्गत बच्चे का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास होता है।

अभिभावक संरक्षित विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना

विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में पारिवारिक वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। परिवार का वातावरण जिस प्रकार का होता है उसी प्रकार बच्चे के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। द्विवेदी. (2011) ने अध्ययन में पाया कि जिन बच्चों के माता–पिता उनकी पढ़ाई में रूचि लेते हैं ऐसे बच्चे परीक्षा में अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन करते हैं। यदि परिवार के सदस्य आपस में सहयोग, सहानुभूति, आपसी प्रेम एवं मिलजुलकर कार्य करते हैं तो बच्चा भी इन गुणों को सीखता है और उस पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और यदि घर का वातावरण दूषित, अशांत एवं कलहपूर्ण होता है तो इससे बच्चे के ऊपर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अक्सर देखा गया है कि बहुत से बच्चे मानसिक तनाव, कुण्ठा एवं अवसाद से ग्रसित होते हैं वे अपने को उपेक्षित महसूस करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि परिवार के सदस्य एवं माता–पिता उन पर ध्यान नहीं देते हैं। वे बात–बात पर बच्चों को डांटते एवं मारते हैं, उनको अपनी बातों को व्यक्त करने का अवसर नहीं देते हैं। ऐसे बच्चे स्वभाव से या तो गुस्सैल व आक्रमक हो जाते हैं या फिर स्वभाव से शांत एवं सुस्त हो जाते हैं। वे अंदर–अंदर घुटते रहते हैं और डर के मारे अपने माता–पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से अपनी बात खुलकर नहीं कर पाते हैं, कई बार वे आत्म–हत्या जैसा कठोर कदम उठा लेते हैं या जीवन को समाप्त करने की कोशिश करते हैं।

इन सब बातों का सीधा प्रभाव बच्चे के शैक्षिक विकास पर पड़ता है। बच्चा शैक्षिक गतिविधियों में पिछड़ता चला जाता है और उसकी शैक्षिक उपलब्धि निरन्तर घटती चली जाती है इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चे को भावनात्मक सुरक्षा, प्रोत्साहन एवं

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

समय–समय पर मार्गदर्शन प्रदान करें। बच्चे को अच्छा स्वस्थ शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करायें। ऐसा कहा भी गया है कि जैसा घर का वातावरण एवं परिवार के सदस्यों का व्यवहार होता है, उसी के अनुरूप बच्चे के व्यक्तित्व का विकास होता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना के आधार पर कह सकते है कि अभिभावक बच्चों में अच्छी आदतों का विकास करते हैं और जीवन संघर्ष के लिए तैयार करते हैं। विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता का आधार न केवल उसकी बौद्धिक क्षमता है बल्कि उसका आत्म–विश्वास, स्वप्रेरणा, भावनात्मक सुरक्षा एवं उसके तनाव के स्तर पर निर्भर करता है। कई बार बच्चे तनाव के कारण आती हुई चीजों को भी गलत कर देते हैं। ऐसे में यदि अभिभावक या परिवार के सदस्य बच्चे पर अत्यधिक दबाव डालते है तो वह सुधार करने के स्थान पर अवसाद का शिकार हो जातें हैं। ऐसी स्थिति में अभिभावकों का बच्चों के प्रति सकारात्मक पालन–पोषण आवश्यक है अर्थात् बच्चे से संवाद, बच्चों को अपनी बात कहने का अवसर देना, स्नेह एवं प्यार देना उसकी क्षमताओं को प्रोत्साहित करना एवं रचनात्मक कार्यो को बढ़ावा देना एवं स्वयं भी रचनात्मक गतिविधियों में सहयोग करना, बच्चों को अनुकूल शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना माता–पिता एवं परिवार का दायित्व है। पारिवारिक तनाव, घरेलू संघर्ष या हिंसा माता–पिता की अत्यधिक उच्च अपेक्षाएं बच्चे की एकाग्रता को भंग करती है और उसके विकास में बाधा पहुॅचाती है। अतः बच्चों के विकास में अभिभावकों एवं परिवार की सक्रिय भूमिका एवं भागीदारी महत्वपूर्ण है।

Reference

1. Afyon, C.E., & Kaya, M. (2020). A meta analysis of the effect of parental involvement on students academic achievement, *Journal of Learning for Development*, 7 (3), 367-383, https ://doi.org /10. 56059/ j 14 d.v 7i3. 417

2. Cashman, L. Sabates, R., & Alcott, B. (2021). parental involvement in low-achieving children's learning: The role of household wealth in rural India, *International Journal of Educational Research*, 105, 101701, https://doi.org/10. 1016/j. ijer. 2020.101701

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

3. Dwivedi, R.D. (2011). Effect of classroom climate and parental awareness on academic achievement of secondary school students, *Journal of Indian Education*, 37 (3), 75-84.

4. Fan, X., & Chen, M. (2001), Parental involvement and students academic achievement: A meta- analysis, *Educational Psychology Review*, 13 (1), 1- 22.

5. Hill, N.E., & Tyson, D.F. (2009). Parental involvement in middle school: A meta analytic assessment of the strategies that promote achievement, *Developmental Psychology*, 45 (3), 740-763, https :// doi .org /10.1037/a 0015362.

6. Jaiswal, S.K., & Choudhuri, R. (2017). A review of the relationship between parental involvement and student's academic performance, *The International Journal of Indian Psychology*, 4 (3), https://doi.org/10. 25215/0403.052

7. Kim, S. (2022). Fifty years of parental involvement and achievement research: A Second-order meta-analysis, *Educational Research Review*, 37, 100463, https://doi.org/10. 1016/j.edurev.2022.100463

8. Roostin, Erna. (2018). Family influence of the development of children, *Journal of elementry Education*. Vol (2). 1-12.

9. Singh, R., & Ranganathan, T. (2026). Does Parental involvement improve learning outcomes of children? *Evidence from India, Oxford Development Studies*, 54 (2), 145-166, https://doi.org/10. 1080/13600818. 2025. 2611233

10. Vijayalakshmi, K., & Muniappan, K. (2016). parental involvement and achievement of secondary school students, *The International Journal of Indian Psychology*, 3 (4), 72-81, https://doi.org/10. 25215/0304142

11. Wilder, S. (2014). Effects of Parental involvement on academic achievement: A meta-Synthesis, *Educational Review*, 66 (3), 377- 397, https://doi.org/10. 1080/00131911. 2013.780009